भजन

आये हैं देखो पारब्रह्म, आये हैं देखो पारब्रह्म
दुनिया मे ना जाने नाम कोई, वेदो मे भी अगम निगम कही
सादियों से भटकी दुनिया को देने आये है तारतम

1–पहले क्षर की मैं बात बताऊं, क्षर क्या है मैं ये समझाऊं
ब्रह्मा विष्णु महेश ये त्रैगुन ,आदि नारायण से उपजे ये गुन
जब महाप्रलय का जोर –जोर, तब रहसी ना कोई और –और
तब होगा कौन सा ठौर – ठौर

2– अक्षर ब्रह्म है सतअंग पिया का, जो है दिखाता खेल ये दुख का
कृष्ण – कृष्ण जो कोई नर गावे, योगमाया तक पहुंच वो पावे
है कृष्णा नाम का ठाम यहीं, ले जाये ना इससे आगे कहीं
आखंड है ये आन्नद नही जो कहलाते है अक्षर ब्रह्म

3–अक्षरातीत जो शब्दों में ना आये, वो ही तो पूर्ण ब्रह्म कहलाये
ब्रह्ममुनियों के कारण यहां आना हुआ है,जिनकी वजह से दुनिया तर जाये
है चारों तरफों नूर जहां, है नूर से सब भरपूर वहां
रहते है इश्क में चूर जहां, बिन इश्क ना मिलते पारब्रह्म